# प्रवासी पक्षियों का मुद्दा चर्चा में क्यों है ?

- भारत का विशाल क्षेत्र, उच्चावच विविधता, विविध जलवायु, अनेक पारिस्थितिक तंत्र-पर्वत, पहाड़, मैदान, झीलें, रेंगिस्तान आदि की मौजूदगी प्रवासी पक्षियों को प्रवास करने के लिए आकर्षित करता है। इसी कारण हजारों पक्षी हर साल भोजन की तलाशा तथा गर्मी और सर्दी से बचने के लिए आते हैं।
- आर्कटिक क्षेत्र में जब ठण्ड पड़ती है तो यह पक्षी भयानक ठण्ड से बचने के लिए और दक्षिण में जब गर्मी पड़ती है तो उससे बचने के लिए पक्षियों की कई प्रजातियों भारत में शरण लेते हैं।
- भारत आने वाले कुछ प्रवासी पक्षी-

1. साइबेरियन क्रेन मूलतः- पश्चिमी साइबेरीया का पक्षी है। यह एक संकटग्रस्त प्रजाति है। साइबेरिया में जब भयानक ठण्ड पड़ती है तो यह पक्षी 4000 मील की यात्रा करके भारत आते है। भरतपुर (राजस्थान) का केवललादेव नेशनल पार्क इनका पसंदीदा स्थल है।
2. ब्लू थ्रोट **(Blue Throat)** एक छोटे आकार का पक्षी है जो अलास्का से उड़कर भारत आता है। इसकी गर्दन के नीचे एक नीले रंग का धब्बा होता है। इस पक्षी की विशेषता यह है कि यह दूसरे पक्षियों के आवाज की नकल कर लेता है। राजस्थान का जलवायु ठण्ड के समय में इनके लिए बहुत अनुकूल होता है।
3. रफ **(Ruffs)** यह आर्कटिक टुंड्रा का निवासी है जो तापमान शून्य से नीचे जाने पर बड़ी संख्या में यह भारत में प्रवास करके आते हैं।

4. रूडी शेल्डक **(Ruddy Shelduck)** यह मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्व यूरोप का पक्षी है। यह ठण्ड के समय भारतीय वेटलेंडस की ओर प्रवास करते हैं। इसे ब्राह्मणी बतख के नाम से जाना जाता है।

- इनके अलावा भारत आने वाले पक्षियों में साइबेरियन क्रेन, ग्रेटर फ्लेमिंग, कॉमन टील, रोजी पेलिकन, गडवाल, वूड सैंडपाइपर, ब्लैक टेल्ड गॉडविट आदि पक्षी आते हैं।
- प्रवासी पक्षी कई तरह से पारिस्थितिकी का संरक्षण करते हैं और इनका किसी स्थान पर रहना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।
- भारत में प्रवासी पक्षियों के संदर्भ में एक नया पैटर्न विकसित होता हुआ दिखाई दे रहा है। यह पैटर्न है प्रवासी पक्षियों का समय से पूर्व वापस लौटना। हाल ही में यह सूचना आई है कि चिल्का झील और भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास से जो पक्षी मार्च या अप्रैल में जाते थे, उन्होंने फरवरी में ही इन स्थानों को छोड़ना प्रारंभ कर दिया है। यह पक्षी यहां से उस समय जाते थे जब तापमान 39 डिग्री सैल्सियस तक बढ़ जाता था।
- हाल के समय में इन क्षेत्रों में तापमान बढ़ने की दर दर्ज की जा रही है। वर्ष 2015-2019 के बीच फरवरी माह का औसत तापमान 34-35 डिग्री सैल्सियस दर्ज किया गया था। समय के साथ इसमें वृद्धि दर्ज भी की जा रही है।
- तापमान बढोत्तरी के अलावा यहां से पक्षियों के प्रवास का एक और कारण घटता जल स्तर और सूखते जलीय क्षेत्र हैं, जिसके कारण पक्षियों का आवास, भोजन, प्रजनन आदि प्रभावित हो रहा है।

- चिल्का झील एशिया का सबसे बड़ा लैगून झील है तो भीतरकनिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव क्षेत्र है। पहला-सुंदरबन मैंग्रोव क्षेत्र है।
- इन दो पारिस्थितिक क्षेत्रों का न सिर्फ पारिस्थितिकी महत्व बहुत ज्यादा है बल्कि यह प्रवासी पक्षियों के सबसे बड़े आवासीय क्षेत्रों में से एक हैं।
- यहां का एक अन्य प्रमुख आकर्षण इरावदी डॉलफिन है।
- चिल्का झील को 1981 में रामसर कन्वेंशन के तहत भारत का पहला भारतीय आर्द्रभूमि क्षेत्र नामित किया गया था।
- चिल्का लैगून क्षेत्र के लगभग 16 वर्ग किमी. क्षेत्र को वर्ष 1987 में पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया था। यह क्षेत्र नलबाना द्वीप (फॉरेस्ट ऑफ रीडस) के नाम से जाना जाता है।
- चिल्का झील में ही कालिजई मंदिर स्थित है।
- ओडिशा का भीतरकनिका क्षेत्र जीवों के अवास/घर के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थलों में से एक है। इसके अंतर्गत 3 क्षेत्र आते हैं।
  1. भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान
  2. भितरकनिका वन्यजीव अभ्यारण्य
  3. गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य।
- यह जैवविविधता क्षेत्र ब्राह्मणी, वैतरणी, महानदी प्रणाली तथा धामश नदी के मुहाने पर स्थित है। यह देश के 75 प्रतिशत खारे पानी के मगरमच्छों का निवास स्थान है।
- प्रवासी जीवों के संरक्षण के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत कन्वेंशन ऑन माइग्रेटरी स्पीशिज (CMS) को लागू किया गया।

वर्ष 1979 में जर्मनी के बना में इस पर हस्ताक्षर किसे जाने के कारण इसे बान कन्वेंशन के नाम से जाना जाता है। यह कन्वेशन 1983 में प्रभावी हुआ। यह उस मार्ग, क्षेत्र के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता की वकालत करता है, जिस रास्ते से जीवों का प्रवास होता है।

- भारत ने भी बान कन्वेंशन पर प्रारंभ में हस्ताक्षर किया था। भारत प्रवासी जीवों को इस कन्वेंशन के तहत संरक्षण देने के स्था-साथ वन्यजीव संरक्षण कानून 1972 के तहत भी संरक्षण प्रदान करता है।
- प्रत्येक वर्ष दो बार (मई एवं अक्टूबर माह के दूसरे शानिवार) ''विश्व प्रवासी पक्षी दिवस'' वर्ष 2006 से मनाया जाता है। इसे अफ्रीकन-यूरेशियन माइग्रेटरीज वॉटरबर्ड्स और **CMS** द्वारा प्रारंभ किया गया था।
- मई 2020 में मनाये विश्व प्रवासी पक्षी दिवस की थीम पक्षी हमारी दुनिया को जोड़ते हैं **(Dirds Connect Our World)** रखा गया था।